अध्याय

02

राजस्थान की रजत बूंदें

© JCERT not to be republished

अनुपम मिश्र

लेखक परिचय

1. अनुपम मिश्र का जन्म 5 जून1948 को महाराष्ट्र के वर्धा में हुआ था।
2. एम.ए करने के बाद से ही ये दिल्ली में स्थित गाँधी शांति प्रतिष्ठान से जुड़ गये।
3. वह जाने माने लेखक, संपादक, छायाकार और प्रख्यात गांधीवादी पर्यावरण-विद थे।
4. पर्यावरण के प्रति जागरूकता और जल-संसाधन के प्रति असाधारण योगदान के लिए इन्हें जाना जाता है।
5. वह जीवन पर्यंत जल-जमीन और पर्यावरण के प्रति समर्पित रहे।
6. उनके ही प्रयासों से सूखाग्रस्त क्षेत्रों में शुमार अलवर में जल-संरक्षण का कार्य किया गया।
7. अरवरी नदी को पुनर्जीवित करने में उनका प्रयास सराहनीय है।
8. **प्रमुख रचनाएँ-** आज भी खरे हैं तालाब, साफ माथे का समाज, राजस्थान की रजत बूँदें आदि।
9. **पुरस्कार-** जमनालाल बजाज पुरस्कार, इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार, चंद्रशेखर आजाद राष्ट्रीय पुरस्कार, कृष्ण वलदेव वैद पुरस्कार आदि।
10. भारत का यह महान पर्यावरणविद 19 दिसंबर 2016 को नई दिल्ली में चिर निद्रा में विलीन हो गया।

पाठ-परिचय

प्रस्तुत पाठ 'राजस्थान की रजत बूंदें' के लेखक प्रख्यात गाँधीवादी पर्यावरण-विद अनुपम मिश्र जी हैं। इस पाठ में राजस्थान के मरुभूमि में मीठे पानी के स्त्रोत कुईं का वर्णन किया गया है। कुईं निर्माण से लेकर इसके प्रयोग तक का बहुत बारीकी और गहनता के साथ इस पाठ में लेखक ने वर्णन किया है।

कुईं की खुदाई तथा चिनाई का काम करने करने वाले लोगों को चेलवांजी या चेजारो कहा जाता है और उनके काम को चेजा कहा जाता है। कुईं का व्यास बहुत ही संकरा होता है जिसके कारण खुदाई का काम बसौली से किया जाता है। कुईं की गहराई में गर्मी को कम करने के लिए ऊपर से लोग मुट्ठी भर-भर के रेत नीचे फेंकते है जिसके कारण नीचे की गर्म हवा ऊपर की ओर आती है। उपर से फेंकी जा रही रेत की चोट से बचने के लिए चेलवांजी अपने सर पर धातु की टोपी पहनते हैं।

कुईं का अर्थ होता है छोटा सा कुआं। सामान्यतः कुंए की अपेक्षा कुईं का व्यास अपेक्षाकृत कम होता है पर गहराई लगभग समान होती है। कुएँ का निर्माण भूजल को पाने के लिए किया जाता है जबकि कुईं का निर्माण वर्षा का पानी इकट्ठा करने के लिए करते है। राजस्थान के अलग — अलग इलाकों में एक विशेष कारण से कुईंयों की गहराई कुछ कम ज़्यादा होती है। यहाँ पर कही कही रेत की सतह के पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की पट्टी मिलती है। कुएँ का पानी खाराहोने के कारण पिया नही जा सकता। इसी कारण

© JCERT not to be republished

कुईंयाँ बनाने की आवश्यकता होती है। यह पानी अमृत के समान मीठा होता है।

इस पाठ में लेखक ने पानी को तीन रूपों में बांटा है। पहला रूप है पालर पानी -यानी सीधे बरसात से मिलने वाला जल। यह धरातल पर बहता है और इसे नदी, तालाब आदि में रोका जाता है। पानी का दूसरा रूप है पाताल पानी। यह वह भूजल है जो कुओं से प्राप्त होता है। तीसरा रूप है रेजाणी पानी। यानि की धरातल से नीचे उतरा लेकिन पातालमें न मिल पाया पानी रेजाणी पानी कहलाता है। रेजाणी पानी खड़िया पट्टी के कारणपाताली पानी से अलग बना रहता है। इसी रेजाणी पानी को रेत -कणों से समेटने के लिए कुईं का निर्माण किया जाता है।

कुईं की खुदाई या चिनाई के काम में बहुत सावधानी बरती जाती है। जरा सी चूक होने पर इन चेजारों को अपने प्राणों से हाथ भी धोना पड़ सकता है। कभी -कभी कुईं बनाते समय ईंट की चिनाई से मिट्टी को रोकना संभव नहीं हो पाता। इसके लिए लकड़ी के लट्ठे नीचे से उपर की ओर एक दुसरे में फंसाकर सीधे खड़े किये जाते हैं। फिर इन्हें खींप या चग की रस्सी से बांधा जाता है। यह बंधाई कुंडली का आकार ले लेती है, इसलिए इसे साँपणी भी कहते हैं।

राजस्थान की परम्परा के अनुसार कुईं निर्माण के उपरांत चेलवान्जियों के लिए विशेष भोज का आयोजन किया जाता है तथा उन्हें विदाई के समय तरह -तरह के भेंट दिए जाते हैं। बंजारों के साथ गाँव वालों का सम्बन्ध यहीं तक नही रहता बल्कि वर्ष भर में होने वाले तीज -त्योहारों, विवाह आदि मंगल अवसरों पर नेग दी जाती है तथा फसल कटाई के बाद खलिहानों में उनके नाम का अनाज निकल दिया जाता था। परन्तु आधुनिकता की आंधी ने इस कार्य को भी नहीं छोड़ा। अब केवल उनको मजदूरी देकर विदा कर देने का रिवाज आ गया है।

कुईं का व्यास कम होने के कारण इसे साफ़ और ढँक कर रखना आसान होता है। हरेक कुईं पर लकड़ी के बने ढक्कन मिल जाएंगे। कहीं -कहीं खस की टट्टी की तरह घास -फूस या लकड़ी की छोटी -छोटी टहनियों से बने ढक्कनों का उपयोग किया जाता है। कुईं से पानी खींचने की सुविधा के लिए उस पर घिरनी या चकरी भी लगाई जाती है। गाँव में हरेक की अपनी - अपनी कुईं है तथा उसे बनाने और उस से पानी लेने का अधिकार उनक स्वयं का है। लेकिन कुईं का निर्माण चूँकि गाँव -समाज की सार्वजनिक भूमि पर किया जाता है इसलिए निजी होते हुए भी उस पर ग्राम-समाज का अंकुश बना रहता है।

राजस्थान में हर जगह खड़िया पट्टी की उपलब्धता नहीं होने के कारण कुईं का निर्माण सभी जगहों पर नहीं होता। चुरू, बीकानेर, और बाड़मेर के कई क्षेत्रों में यह खड़िया पट्टी मिलती है। यही कारण है कि वहां गाँव -गाँव में कुइयां ही कुइयां हैं। इस प्रकार से राजस्थान में कुईं खड़िया पट्टी के बल पर खारेपानी के बीच मीठे पानी का मधुर स्त्रोत है।

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ-

चेलवांजी— कुईं की खुदाई और चिनाई करने वाले लोग।

गोचर— चारागाह।

तरबतर— अधिक भीगा हुआ।

विचित्र— अजीब।

उखरूं— घुटने मोड़ कर बैठना।

मरुभूमि— मरुस्थल।

डगालों— मोटी टहनियों।

विभाजन— बटँवारा।

संकरा— थोड़ी जगह।

आंच प्रथा— राजस्थानी प्रथा।

पेचीदा— उलझा हुआ।

खींप— एक प्रकार की घास जिसके रेसों से रस्सी बनती है।

आवक—जावक— आने जाने की क्रिया।

प्रश्न -अभ्यास

1. राजस्थान में कुईं किसे कहते हैं ?इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है ?

उत्तर:- राजस्थान में कुईं कुंए के छोटे रूप को कहते हैं। इसका निर्माण वर्षा जल को पीने के लिए संरक्षित करने के लिए किया जाता है। अधिक वर्षा होने के कारण रेत से रिस -रिस कर पानी कुईं में एकत्रित होती रहती है और इसका जल कुएं के जल की तरह खारा न होकर मीठा होता है। कुईं और कुओं की गहराई लगभग समान ही होती है,व्यास में थोडा अंतर होता है। सामान्य कुओं का व्यास तक़रीबन पंद्रह से बीस हाथ का होता है वहीँ कुईं का व्यास लगभग पाँच से छः हाँथ का होता है।

2. दिनों -दिन बढती पानी की समस्या से निपटने में यह पाठ आपकी कैसे मदद कर सकता है तथा देश के अन्य राज्यों में इसके लिए क्या उपाय हो रहे हैं ? जानें और लिखें।

उत्तर:- यह पाठ बढती जा रही पानी की समस्याओं से निपटने में हमारी काफी मदद कर सकता है। राजस्थान जैसे मरुस्थलीय इलाकों में जहाँ पानी की सदैव किल्लत रहती है, वहां कुइयों के निर्माण द्वारा वर्ष जल को संरक्षित करके साल भर प्रयोग में लाया जाता है। ठीक उसी प्रकार से हम भी भू-जल को बढाने के लिए घर की छतों और आँगन में वर्षा जल को संरक्षित कर सकते हैं।

देश के विभिन्न राज्यों में जल को संरक्षित रखने के लिए तरह -तरह के प्रयोग किये

© JCERT not to be republished

जा रहे हैं। जैसे- तालाब, झील, पोखर, नदी आदि का पुनरुद्धार, नागरिकों में जल संबंधी जागरूकता, गंदे जल का सिंचाई में उपयोग,नदियों की स्वच्छता तथा जल को संरक्षित करने का प्रयास हो रहा है।

3. चेजारों के साथ गाँव समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज क्या फर्क आया है?पाठ के आधार पर बताइये।

उत्तर:- राजस्थान के ग्रामीण समाज में चेजारों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। वह ग्रामीण समाज के लिए सालों भर पीने योग्य पानी को संरक्षित करने के लिए कुईं का निर्माण करते थे। काम पूरा होने पर उनके लिए भोज का आयोजन होता था। उनकी विदाई के समय तरह -तरह के भेंट दिए जाते थे। उन्हें तीज-त्योहारों, विवाह जैसे मंगल अवसरों पर नेग दिया जाता था तथा फसल की कटाई के बाद खलिहान में उनके नाम का अलग से हिस्सा होता था। परन्तु अब यह स्थिति हो गयी है कि केवल उनके काम की मजदूरी दे कर उनको विदा कर दिया जाता है। अब पहले जैसा कोई सम्बन्ध उनके साथ नही रखा जाता।

4. निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुइयों पर ग्राम-समाज का अंकुश लगा रहता है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

उत्तर:- जिन क्षेत्रों में कुईं का निर्माण किया जाता है वहां पहले से ही हर एक की अपनी -अपनी कुईं है। उससे पानी निकालना उनका हक़ है। लेकिन इन कुइयों का निर्माण गाँव की सार्वजनिक भूमि पर होता है। उस जगह पर बरसने वाला पानी ही बाद में साल भर नमी की तरह सुरक्षित रहता है और इसी नमी से कुइयों में पानी भरता है। ऐसे में नयी कुईं के निर्माण का अर्थ होगा -पहले से तय नमी का बंटवारा। यही कारण है कि निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में बसी कुइयों पर ग्राम-समाज का अंकुश रहता है। अतिआवश्यक होने पर ही समाज नयी कुइयों के निर्माण के लिए स्वीकृति प्रदान करता है।

5. कुईं निर्माण से संबंधित निम्नशब्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करें- पालर पानी, पाताल पानी, रेजाणी पानी।

उत्तर:- पालर पानी- पालर पानी का अर्थ है सीधे बरसात से मिलने वाला पानी। नदी तालाब पोखर आदि में जमा पानी को हम पालर पानी कह सकते हैं।

पाताल पानी- कुओं से प्राप्त पानी को पाताल पानी कहा जाता है।

रेजाणी पानी- कुईं से प्राप्त जल को, रेजाणी पानी कहा जाता है। यह रेत की नमी से रिस कर निचे खड़िया पट्टी के ऊपर रहता है। कुओं के खारेपन की अपेक्षा इसका पानी अमृत के सामान मीठा होता है।

© JCERT not to be republished

बहुवैकल्पिक प्रश्न

1.राजस्थान की रजत बूंदे पाठ के लेखक है ?

(क) कुमार गंधर्व।

(ख) बेबी हालदार।

(ग) सुमित्रानंदन पंत।

(घ) अनुपम मिश्र।

उत्तर- (घ) अनुपम मिश्र

2. कुईं की कितनी गहरी खुदाई हो चुकी है ?

(क) दस — बीस हाथ।

(ख) पंद्रह -बीस हाथ।

(ग) तीस — पैंतीस हाथ।

(घ) बीस — पचिस हाथ।

उत्तर- (ग) तीस — पैंतीस हाथ

3. कुईं शब्द से तात्पर्य है—

(क) खुला स्थान।

(ख)गहरा स्थान।

(ग)छोटा सा कुआँ।

(घ)गहरा सा कुआँ।

उत्तर- (ग) छोटा सा कुआँ

4. चेलवांजी का शाब्दिक अर्थ है ?

(क) चेजारों।

(ख) निहारो।

(ग) पुचकारो।

(घ) फटकारो।

उत्तर- (क) चेजारों

5. बड़े कुओं के पानी का स्वाद कैसा होता है ?

(क) मीठा।

(ख) खारा।

(ग) कड़वा।

(घ) नमकीन।

उत्तर -(ख) खारा

6. कुईं के पानी को साफ़ रखने के लिए उसे किस ढक्कन से ढका जाता है ?

(क) पत्थर।

(ख) लकड़ी।

(ग) लोहा।

(घ) ताबा।

उत्तर- (ख) लकड़ी

© JCERT not to be republished

7. कुईं की खुदाई किससे की जाती है ?

(क) बसौली से।

(ख) दराती से।

(ग) फावडे से।

(घ) हत्थी से।

उत्तर– (क) बसौली से

8. वर्षा की मात्रा नापने के लिए किस शब्द का प्रयोग होता है ?

(क) रेजा।

(ख) पत्ती।

(ग) इंच।

(घ) सेंटीमीटर।

उत्तर– (क) रेजा

9. कुंई की गरमी कम करने के लिए ऊपर जमीन पर खड़े लोग मुट्ठी भर-भरकर नीचे क्या फेंकते हैं?

(क) रेत।

(ख) पानी।

(ग) टोप।

(घ) रस्सी।

उत्तर:– (क) रेत

10. बड़े कुओं में पानी कितनी गहराई पर निकलता है?

(क) डेढ़ सौ-दो सौ हाथ।

(ख)दो सौ-तीन सौ हाथ।

(ग) सौ-दो सौ हाथ।

(घ) तीन सौ-चार सौ हाथ।

उत्तर:– (क) डेढ़ दो सौ हाथ

11 .बड़े कुओं के पानी का स्वाद कैसा होता है?

(क) मीठा।

(ख) नमकीन।

(ग) कडुवा।

(घ) खारा।

उत्तर:– (घ) खारा

12. जहाँ लगाव है, वहाँ ..... भी होता है?

(क) बिखराव।

(ख) अलगाव।

(ग) वसान।

(घ) कुछ भी नहीं।

उत्तर:– (ख) अलगाव

© JCERT not to be republished

13 .मरुभूमि के विकसित किए गए समाज ने वहाँ उपलब्ध पानी को कितने रूपों में बांटा है?

(क) चार।

(ख) पाँच।

(ग) सात।

(घ) तीन।

उत्तर:- (घ) तीन

14 .उपलब्ध पानी के तीन रूप हैं?

(क) पालर पानी।

(ख) पाताल पानी।

(ग) रेजाणी पानी।

(घ) उपरोक्त सभी।

उत्तर:- (घ) उपरोक्त सभी।

15. वर्षा की मात्रा मापने के लिए किस शब्द का प्रयोग होता है?

(क) पट्टी।

(ख) इंच।

(ग) सेंटीमीटर।

(घ) रेजा।

उत्तर:- (घ) रेजा

16 .पाँच हाथ के व्यास की कुंई में रस्से की एक ही कुंडली का केवल एक घेरा बनाने के लिए लगभग कितना लंबा रस्सा चाहिए?

(क) पंद्रह हाथ।

(ख) बीस हाथ।

(ग) पाँच हाथ।

(घ) दस हाथ।

उत्तर:- (क) पंद्रह हाथ।

© JCERT not to be republished